PHYSIOGRAPHIC REGIONS OF INDIA

~~यह विश्व का सबसे बड़ा देश है~~ ~~भारत एशिया महाद्वीप का महत्त्वपूर्ण देश है~~ वर्तमान में भारत का धरातलीय स्वरूप अनेक विभिन्नताएँ एवं विशेषताओं से युक्त है। उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी क्षेत्रों में जहाँ गगनचुम्बी पर्वतें व पर्वतश्रेणियाँ का विस्तार है तथा समुद्र तल से महज कुछ मीटर की ऊँचाई वाला गंगा डेल्टा प्रदेशीय मैदानी भाग भी है। दक्षिण भारत का पूरा प्रदेश ही पठारी स्वरूप लिए हुए है। इसके अतिरिक्त छोटी-छोटी खाड़ियाँ एवं नदी घाटियाँ आदि से भरा-पड़ा है। यहाँ पर पर्वत-पहाड़ियाँ पठार और मैदान सभी प्रकार के भूदृश्य पाये जाते है। भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का लगभग 11% भूभाग पर्वतीय, 18% भूभाग पहाड़ी, 28% भूभाग पठारी तथा शेष 43% भूभाग मैदान है। विश्व के औसत की अपेक्षा यहाँ पर मैदानी भाग का विस्तार है। भारत के 4 भौतिक प्रदेश है —

2 → प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश (The Peninsular uplands)
1 → उत्तरी पर्वतीय प्रदेश (The Northern Mountains)
3 → विशाल मैदान (The Great plains)
4 → भारतीय तट एवं द्वीप-समूह (The Indian Coasts & Island)

I उत्तरी पर्वतीय प्रदेश (THE NORTHERN MOUNTAIN REGION) : —

भारत के उत्तर एवं उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र उच्च धरातल, हिमाच्छादित चोटियाँ, गहरी कटी-फटी घाटियाँ, पूर्वगामी जलप्रवाह, पेचीदी भूगर्भीय संरचना और उपोष्ण अक्षांशों में मिलने वाली शीतोष्ण सघन वनस्पति आदि विशेषता के कारण अन्य भौतिक विभाग बिल्कुल अलग दिखती है। यह एक नवीन मोड़दार पर्वतमाला है जिसके निर्माण में Compressive force और tangential earth movement का हाथ रहा है। यह पर्वत क्षेत्र भारत के सिंधु नदी के मोड़ से प्रारंभ होकर ब्रह्मपुत्र नदी की मोड़ तक 2400km की लम्बी एवं 160-400km की चौड़ाई में फैला है। एशिया के 94 सबसे ऊँची चोटियों में 32 इसी में स्थित है यही नहीं विश्व की सबसे ऊँची चोटी मॉउंट एवरेस्ट चोटी (8851m) इस भाग में स्थित है। यह पर्वत श्रेणी अनेक पर्वतों का समूह है जिनमें मुख्य श्रेणी को हिमालय श्रेणी के नाम से जाना जाता है। इसके उत्तर में तिब्बत का पठार व दक्षिण में सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का विशाल मैदान फैला है। इसका आकार तलवार की भांति है।

O.H.K Spate (स्पेट) महोदय ने इसे 5 देशांतरीय क्षेत्र कटिबंधों में रखा है, जबकि सामान्य रूप से इसमें 4 समांतर श्रेणियाँ पायी जाती है — (i) वृहत हिमालय (ii) मध्य हिमालय (iii) शिवालिक (iv) ट्रांस अथवा तिब्बत हिमालय।

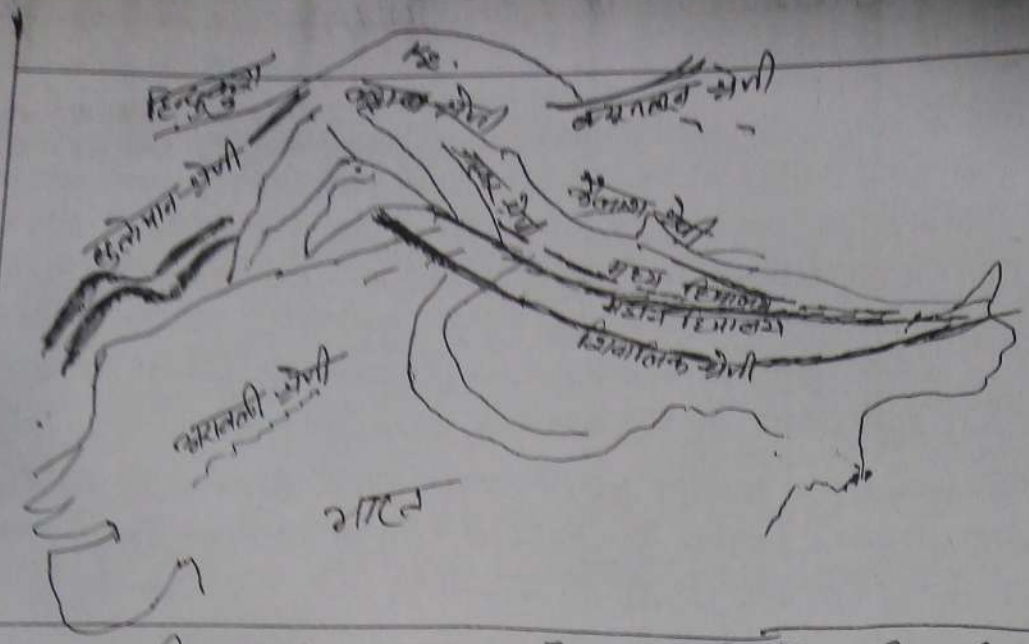

I <u>बृहत हिमालय</u> :- यह सबसे उत्तर की ओर की पर्वत श्रेणी है जो 2400 km लम्बा एंव 25 km चौड़ा है। इसकी औसत ऊँचाई 6000 m है। इसमे 7500 m से अधिक ऊँची 40 ज्ञात चोटियाँ है। यहाँ न केवल हिमालय की सबसे ऊँची चोटी अपितु विश्व की सबसे ऊँची चोटी माऊण्ट एवरेस्ट (सागरमाथा, गौरीशंकर अथवा चोमोलुंगमा) 8851 m मिलती है। अन्य प्रमुख चोटियों में नंगा पर्वत (8126 m) कंचनजंघा (8598 m) मकालू, अन्नपूर्णा धौलागिरि आदि मिलता है। ये सभी चोटियाँ वर्ष भर बर्फ से ढंकी रहती है। इस श्रेणी का ढाल उत्तर की तरफ मंद या साधारण है किंतु दक्षिण की ओर काफी तीव्र है। इस श्रेणी में सिंधु, सतलज कोसी, दिहांग, नदी की सकीर्ण घाटी मिलती है। मध्यवर्ती भाग से गंगा व इसकी सहायक नदियों का उद्गम होता है। यह श्रेणी विवर्तनिक दृष्टि से काफी सक्रिय है। जो अभी भी उठ रहे है।

II) <u>मध्य हिमालय</u> :— यह श्रेणी महान हिमालय के दक्षिण में इसी के समांतर पश्चिम से पूर्वी दिशा में फैला हुआ है यह श्रेणी 80-100 km चौड़ी व 4500 मीटर ऊँची है। शीत ऋतु में यहाँ 3-4 महीने तक हिमपात होता है किंतु ग्रीष्म काल में यहाँ का वातावरण स्वास्थ्यवर्धक होता है। मध्य हिमालय कई छोटी-छोटी श्रेणियाँ है जिनमें धौलाधर, पीर-पंजाल, महाभारत लेख, चूरियाँ, मंसूरी नैनीताल, दार्जिलिंग, आदि इसी के नीचले भाग में स्थित है। विवर्तनिक दृष्टि से यह क्षेत्र प्रायः शांत व निष्प्रभावी रहा है। इस श्रेणी में स्लेट, चूनापत्थर, क्वार्ट्ज व अन्य शिलाओं की अधिकता पायी जाती है। किंतु इसमे जीवाश्म का अभाव रहता है। इस भाग में कोणधारी वृक्ष एंव ढाल पर छोटे-छोटे घास के मैदान पाये जाते है जिन्हे कश्मीर में मर्ग और उत्तराखण्ड में बुग्याल और पयार कहते है। मध्य हिमालय एंव महान हिमालय के बीच दो खुली घाटियाँ पायी जाती है। पश्चिम में पीरपंजाल, जो मध्य हिमालय का पश्चिमी विस्तार है एंव

कश्मीर में वृ विस्तृत है तथा महान हिमालय के बीच 'काश्मीर घाटी तथा पूर्व में काठमांडु घाटी। इन श्रेणियों में कुल्लु एवं कांगडा दो अन्य महत्वपूर्ण घाटियाँ है

III उप हिमालय या शिवालिक :—

यह मध्य हिमालय के दक्षिण में इसके समांतर लगभग 2200Km की लम्बाई में फैला हुआ है। पूर्व में यह तिस्ता और रायडक नदियों के निकट लुप्त हो गया है। इस श्रेणी का विस्तार पश्चिम में पोटवार बेसिन और पूर्व कोसी नदी तक है। यह हिमालय का सबसे नवीन भाग है जो 20 लाख से 2 करोड़ वर्ष पूर्व का माना जाता है। इस श्रेणी का धरातल ऊँचा-नीचा है। ढाल तीव्र है। भूस्खलन के कारण तथा नदियों द्वारा अधिक कटाव के कारण गहरी घाटियाँ पायी जाती है। यह पर्वत श्रेणी पूर्व में उष्णार्द्र पतझड़ वनों से ढका है। मध्य हिमालय से अलग करने वाली घाटी को पश्चिम व मध्य भाग में दून देहरादून और पूर्वी भाग में हरिद्वार कहा जाता है।

IV ट्रांस या तिब्बत हिमालय । —

यह महान हिमालय के उत्तर में स्थित है। उत्तर पश्चिम दिशा की ओर यह महान हिमालय के समांतर है - इस श्रेणी के बारे में पहली बार 1906 में स्वेन हेडन ने वर्णन किया था। इसमें कई श्रेणिया मिलती है जिनमें जास्कर, लद्दाख, K_2, कैलाश शामिल है। यह श्रेणी बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों तथा उत्तर की ओर भूमि से घिरी हुई झीलों में गिरने वाली नदियों के लिए जल विभाजक का काम करता है।

2) प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश ! —

यह अति प्राचीन भूभाग है जिसका विस्तार 16 लाख वर्ग Km पर है इसकी आकृति त्रिभुजाकार है तथा उत्तर में विशाल मैदान तथा शेष तीनों दिशाओं में समुद्र से घिरा है। यह देश का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है तथा गोंडवाना महाखण्ड का अंग है। इस पठार पर अनेक पर्वत मिलते है, जो निरन्तर लाखों वर्षों की मौसम-क्रिया से प्रभावित है।

विस्तार : — इस पठार का विस्तार उत्तर में राजस्थान से लेकर दक्षिण में कुमारी अंतरीप तक 1700Km की लम्बाई में और गुजरात से

पश्चिम बंगाल तक 1400km की चौडाई में मिलता है। इसके अंतर्गत दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उडीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल आदि राज्यों के भूभाग आते हैं। प्राकृतिक दृष्टि से इसकी उत्तरी सीमा, कैमूर, अरावली तथा राजमहल पहाड़ियों द्वारा बनती है। पूर्व में पूर्वीघाट, पश्चिम में पश्चिमी घाट इसकी सीमा बनाते हैं। इसके अंतर्गत निम्न महत्वपूर्ण पठार हैं — (i) मालवा का पठार (ii) बुंदेलखण्ड व बघेलखण्ड का पठार (iii) छोटा नागपुर का पठार (iv) दक्कन का पठार (v) मेघालय का पठार आदि।

3 विशाल मैंदान :—

इस विशाल मैंदान का निर्माण नदियों द्वारा बहाकर लाए गए निक्षेपों से हुआ है। यह निक्षेप काफी गहरा है। यह विशाल मैंदान विश्व का सबसे अधिक उपजाऊ और घनी जनसंख्या वाला भूभाग है। इसका क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग km है। इस मैंदान की पूर्व-पश्चिम दिशा में 2400km है लेकिन चौडाई में भिन्नता पाई जाती है। जो क्रमशः पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है। इस मैंदान का ढाल बडा समतल है। इसका अधिकांश भाग समुद्र तल से 150m से अधिक ऊँचा नहीं है। राजनीतिक दृष्टि से इस मैंदान का विस्तार उत्तरी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार बंगाल तथा असम राज्यों में है।

मैंदान का भौतिक विभाजन : उत्तर भारत के विशाल मैंदान में अरावली पर्वत श्रेणी एक जल विभाजक के रूप में स्थित है। यह सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैंदान को पूर्वी एवं पश्चिमी भागों में बांट देता है। सिंधु मैंदान पश्चिमी भाग में, गंगा का मैंदान पूर्वी भाग में आता है। ब्रह्मपुत्र का मैंदान अलग से सुदूर पूर्वी भारत में विस्तृत है। धरातलीय विशेषता के आधार पर इसे निम्न भागों में बांट सकते हैं।

1.) राजस्थान का मैंदान :—

इस मैंदान का विस्तार अरावली के पूरब एवं पश्चिम दोनों तरफ 1.75 लाख km^2 के क्षेत्रफल में है। अरावली के पश्चिम में मरूस्थलीय क्षेत्र मिलते हैं जिसमें बालू की प्रधानता मिलती है। कहीं-कहीं नीस, शिस्ट तथा ग्रेनाइट चट्टानों इसको प्रायद्वीपीय पठारी भाग का हिस्सा प्रमाणित करता है। यहाँ दक्षिण प. भाग में पवनानुवर्ती टीले एवं द. पूर्वी भाग में बरखान व अनुप्रस्थ टीले पाये जाते हैं। अरावली के पूर्व बांगर की स्टेपी भूमि मिलती है जिसका विस्तार उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम है। लूनी यहाँ की मौसमी नदी है जो दक्षिण-पश्चिम दिशा में कच्छ के रन की ओर प्रवाहित होता है।

राजस्थान मैदान में सांभर डिडवाना, लूनकरनसर, कुचामन एंव डेगाना जैसे कुछ प्रमुख खारे झील स्थित है।

2. पंजाब - हरियाणा का मैदान :—

यह मैदान सिंधु मैदान का पश्चिमी हिस्सा है। राजनीतिक विभाजन के कारण अब इसे सतलज नदी का मैदान कहना ज्यादा उपयुक्त माना जाता है। यहाँ व्यास, सतलज, चग्घर, रावी नदी बहती है। इस मैदान का विस्तार पंजाब हरियाणा एंव दिल्ली राज्यों में फैला है। यह मैदान 1.75 लाख Km^2 में विस्तृत है जिसका पूर्वी छोर यमुना नदी एंव दक्षिणी-पूर्वी छोर अरावली श्रेणी बनाती है। उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम इस मैदान की लम्बाई 640 kms एंव पश्चिम से पूरब की 300 kms चौडाई में है। मैदान चौरस एंव समुद्र तल से 200-250 m की ऊँचाई पर स्थित है। नदियों के सहारे बाढ के क्षेत्र मिलते हैं जिसकी अधिकतम चौडाई 10-12 Km है जिसे बेट (Bet) कहा जाता है। यहाँ के रावी एंव व्यास के बीच के भूभाग को बारी दोआब, व्यास एंव सतलज के बीच के भूभाग को बिस्त दोआब एंव सतलज के दक्षिणी क्षेत्र को हरियाणा का मैदान या मालवा का मैदान कहा जाता है।

3. गंगा का मैदान :—

इस मैदान का विस्तार UP, बिहार, एंव पश्चिम बंगाल राज्य के 3.57 लाख Km^2 पर है। यहाँ गंगा अपने अन्य सहायक नदियों, यमुना, सोन, कोसी, गंडक, चम्बल आदि के साथ पश्चिम से पूर्व एंव पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। यहाँ प्रतिवर्ष बरसात में बाढ आती है तत्पश्चात हजारों टन मिट्टी का निक्षेप होता है। इसे 3 भागों में बाँटा जाता है।

(i) ऊपरी गंगा का मैदान :— इस मैदान का विस्तार उत्तर में शिवालिक पहाड़ी, दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार, पश्चिम में यमुना नदी एंव पूर्व में 100 m की समोच्चय रेखा के बीच है। यह मैदान समुद्रतल से 100-300 m ऊँचा है। उत्तरी भाग में ढाल तीव्र है जबकि पूर्वी दक्षिणी भाग में ढाल मंद है।

(ii) मध्य गंगा का मैदान :— इस मैदान का विस्तार पूर्वी उत्तर प्रदेश एंव बिहार राज्य के उत्तरी भाग पर विस्तृत है। पश्चिमी सीमा रेखा 100 m की समोच्चय रेखा एंव पूर्वी सीमा उत्तर-पूर्वी भाग में 75 m तथा दक्षिण पूर्व में 30 m की समोच्चय रेखा द्वारा निर्धारित होता है। इस भाग में ढाल काफी मंद होने के कारण यहाँ नदी के मार्ग में परिवर्तन होता रहा है, कोसी का मार्ग परिवर्तन विख्यात है। यहाँ खादर भूमि की प्रधानता है। नदियों के पुराने प्रवाह मार्ग की निशानी के तौर पर अनेक छाड़न झील या गोखुर झील (OXE-BOW-Lakes) मिलते हैं। बाढ़ों की अधिकता इस मैदान की विशेषता है।

(iii) निम्न गंगा का मैदान :—

इस मैदान का अधिकाश भूभाग बंगाल राज्य में पड़ता है। इसका फैलाव उत्तर में हिमालय की तलहटी से लेकर दक्षिण में गंगा के डेल्टा तक है। उत्तरी हिस्सा तिस्ता जलढाका एंव तोरसा नदियों द्वारा सिंचित है। मध्य भाग में यह मैदान राजमहल के पहाड़ी के निकट सकरा हो गया है। दक्षिण की ओर पुराने डेल्टा एंव सुदूर दक्षिण में नवीन डेल्टा मिलता है जो चौड़ा है। यह मैदान समुद्र तल से मात्र 50 m ऊँचा है। समुद्र में उठने वाले ज्वार से ही इस मैदान का अधिकांश दक्षिण भाग एंव सुन्दरवन जलप्लावित हो जाता है

इस कारण अधिकतर भाग दलदल बना रहता है। डेल्टा के ऊपरी भाग में कुछ टीले या नदियों के पुराने किनारे पर पाये जाते हैं। यह भरा भाग ही जनसंख्या का मुख्य केन्द्र होता है।

4) ब्रह्मपुत्र / असम घाटी का मैदान :—
इस मैदान का विस्तार गारो एवं हिमालय पहाड़ी के बीच एक लंबी व सकरी पट्टी के रूप में है। Ramp Valley में ब्रह्मपुत्र नदी एवं उसके सहायक के भारी निक्षेप से बना है। मैदान 720 km लम्बा एवं 80 km चौड़ा है। आगे ब्रह्मपुत्र नदी के जल में अवसादों की मात्रा इतनी अधिक है कि थोड़े से व्यवधान पर कई नदी द्वीप का निर्माण हो जाता है। इस मैदान की ऊँचाई पूर्व में समुद्र तल से 130 m एवं पश्चिम में 30 m है। ढाल प्रति km 12 cm है। ढाल की दिशा दक्षिण से पश्चिम की ओर है।

- मिट्टी की विशेषता एवं ढाल के आधार पर विशाल को निम्न भागों में बांटा जा सकता है —

(•) भाबर प्रदेश (•) तराई प्र० (•) काँप मिट्टी (•) रेह (•) भूड (•) डेल्टाई प्रदेश

IV भारतीय तट एवं द्वीप समूह :— भारतीय तट रेखा 5680 km लम्बी है यह पश्चिम में कच्छ के रन से लेकर पूर्व में गंगा ब्रह्मपुत्र तक फैली है। यह तट व तटीय मैदान संरचना व धरातल की दृष्टि से स्पष्ट विभिन्नताएँ रखते हैं। यह पश्चिमी भाग में पश्चिमी तटीय मैदान तथा पूर्वी भाग में पूर्वी तटीय मैदान के नाम से जाने जाते हैं। यह मैदान या तो समुद्र के अपरदन क्रिया द्वारा बने हैं या नदियों द्वारा बहाकर लाई गई कीचड़ मिट्टी के निक्षेप द्वारा बने हैं।

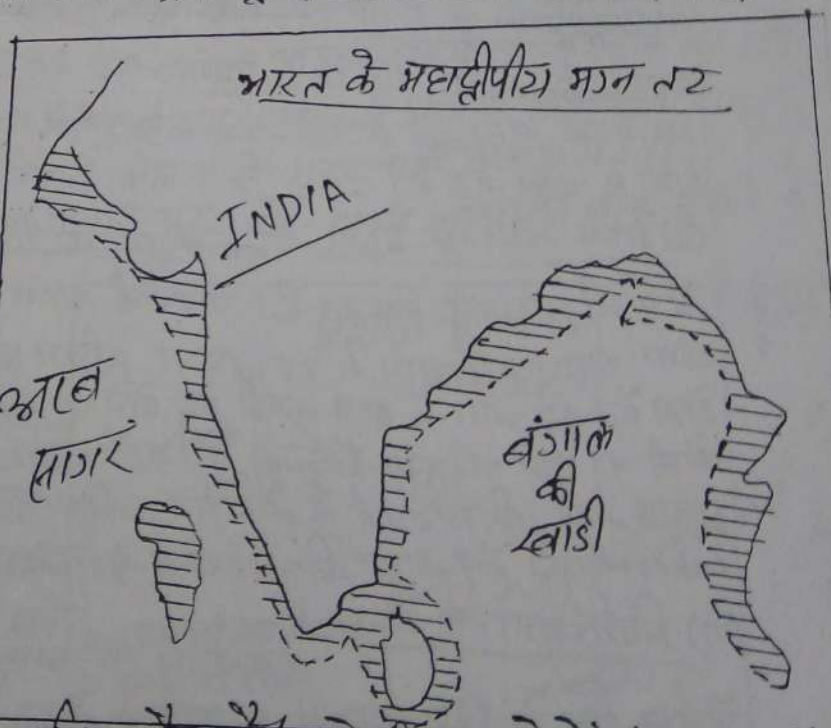

1) पश्चिमी तटीय मैदान :—
इस मैदान की औसत चौ० 64 km है। नर्मदा और ताप्ती नदियों के मुहानों के निकट इसकी सर्वाधिक चौ० 80 km है। अनेक स्थानों पर यह 50 km से कम चौड़ा है। इसके 4 उपखण्ड हैं।
(•) कच्छ प्रायद्वीपीय मैदान
(•) गुजरात का मैदान
(•) कोंकण का मैदान
(•) मालाबार तटीय मैदान
(•) दक्षिणी तटीय मैदान आदि।

2) पूर्वी तटीय मैदान :— यह स्वर्णरेखा नदी से कुमारी अंतरीप तक फैला है। यह पश्चिमी तट की अपेक्षा अधिक चौड़ा है। इसे निम्न भागों में बांटा जाता है —
(•) उत्कल का मैदान (•) आंध्र प्र० का मैदान (•) तमिलनाडु का मैदान।

द्वीप समूह :— भारत में कुल 247 द्वीप हैं जिसमें 222 द्वीप बंगाल की खाड़ी तथा शेष अरब सागर में स्थित हैं। अरब सागर के द्वीप कच्छ की खाड़ी से लेकर सुदूर दक्षिण में कुमारी अंतरीप तक फैले हैं तथा बंगाल की खाड़ी में द्वीप 590 km की लम्बाई तथा अधिक से अधिक 50 km की चौड़ाई में अर्द्धचन्द्राकार के रूप में फैला है।

—:0:—